

शुविवुी कुतंती 2022

डुरलडुस के लडुडु:

शुविवुी कुतंती

डुनुस के लडुडु:

छतुरडत शलुविवुी की वीरतुतु और उनके शुकसनकल डु डुरशुकसन ।

करुतु डु कुतुडु?

छतुरडत शलुविवुी डुहलरकु कुतंती हर वरुष 19 डुरवररी कु उनके सुलहस, डुदुध रणनीतु और डुरशुकसनकल कुशल कु डुडुडु करनुे तथल उनकी डुरशंसल करनुे के लडुडु डुनलई कुतुी है ।

- उनहुुनुे डुीकुडुर की आदललशलुी सलुतनुत के डुतन के सडुडु इस कुषुतुर डुर आधडुतुडु सुथलडुतु कडुडु, कुसलनुे आगे कलकर डुरलठल सुलडुरकुतु की उतुडुतुतु कल डुरशसुत कडुडु ।
- वरुष 1870 डु सडुडु सुधलरक डुहलतुडु कुतुुतरलव डुलुे ने डुणे डु शलुवुी कुतंती डुनलनुे की शुरुआतु की कुसल अबु छतुरडत शलुविवुी डुहलरकु कुतंती के रूडु डु डुनल कुतुल है ।



डुरडुख डुडुडु

छतुरडत शलुविवुी डुहलरकु से संबंडुतु डुरडुख डुडुडु:

- कुनुडु सुथलन:
 - उनकल कुनुडु 19 डुरवररी, 1630 कु वरुतडुन डुहलरकुडुर रकुतु डु डुणे कुललु के शलुवलुनरी कललु डु हुआ थल ।
 - उनकल कुनुडु एक डुरलठल सेनलडुतुशलुहकुी डुुसले के डुर हुआ थल, कुनलके अधकलर डु डुीकुडुर सलुतनुत के तहल डुणे और सुडे की कुगीरुे थी तथल उनकी डुलतुल कुीकुलडुलई एक धरुडुडुरलडुण डुहलललु थी, कुनलके धलरुडुडु कुणुुु कल उन डुर डुहलरकु डुरडुडु थल ।
- आरंडुडुडु कुीवन:

- उन्होंने वर्ष 1645 में पहली बार अपने सैन्य कौशल का प्रदर्शन किया, जब कशोर उमर में ही उन्होंने बीजापुर के अधीन तोरण कलि (Torna Fort) पर सफलतापूर्वक नयितरण प्राप्त कर लिया।
- उन्होंने कोंडाना कलि (Kondana Fort) पर भी अधिकार कर लिया। ये दोनों कलि बीजापुर के आदलि शाह के अधीन थे।

महत्त्वपूर्ण युद्ध:

| | |
|--------------------------|---|
| प्रतापगढ़ का युद्ध, 1659 | <ul style="list-style-type: none"> ■ यह युद्ध मराठा राजा छत्रपति शिवाजी महाराज और आदलिशाही सेनापति अफज़ल खान की सेनाओं के बीच महाराष्ट्र के सतारा शहर के पास प्रतापगढ़ के कलि में लड़ा गया था। |
| पवन खडि का युद्ध, 1660 | <ul style="list-style-type: none"> ■ यह युद्ध मराठा सरदार बाजी प्रभु देशपांडे और आदलिशाही के सदिदी मसूद के बीच महाराष्ट्र के कोलहापुर शहर के पास (वशालगढ़ कलि के आसपास) एक पहाड़ी दर्रे पर लड़ा गया। |
| सूरत का युद्ध, 1664 | <ul style="list-style-type: none"> ■ यह युद्ध गुजरात के सूरत शहर के पास छत्रपति शिवाजी महाराज और मुगल कप्तान इनायत खान के बीच लड़ा गया। |
| पुरंदर का युद्ध, 1665 | <ul style="list-style-type: none"> ■ यह युद्ध मुगल साम्राज्य और मराठा साम्राज्य के बीच लड़ा गया। |
| सहिगढ़ का युद्ध, 1670 | <ul style="list-style-type: none"> ■ यह युद्ध महाराष्ट्र के पुणे शहर के पास सहिगढ़ के कलि पर मराठा शासक शिवाजी महाराज के सेनापति तानाजी मालुसरे और जय सहि प्रथम के अधीन गढ़वाले उदयभान राठौड़, जो कि मुगल सेना प्रमुख थे, के बीच लड़ा गया। |
| कल्याण का युद्ध, 1682-83 | <ul style="list-style-type: none"> ■ इस युद्ध में मुगल साम्राज्य के बहादुर खान ने मराठा सेना को हराकर कल्याण पर अधिकार कर लिया। |
| संगमनेर का युद्ध, 1679 | <ul style="list-style-type: none"> ■ यह युद्ध मुगल साम्राज्य और मराठा साम्राज्य के बीच लड़ा गया। यह आखिरी युद्ध था जिसमें मराठा राजा शिवाजी लड़े थे। |

■ मुगलों के साथ संघर्ष:

- मराठों ने अहमदनगर के पास और वर्ष 1657 में जुन्नार में मुगल कषेत्र पर छापा मारा।
- औरंगज़ेब ने नसीरी खान को भेजकर छापेमारी का जवाब दिया, जिसने अहमदनगर में शिवाजी की सेना को हराया था।
- शिवाजी ने वर्ष 1659 में पुणे में शाइस्ता खान (औरंगज़ेब के मामा) और बीजापुर सेना की एक बड़ी सेना को हराया।
- शिवाजी ने वर्ष 1664 में सूरत के मुगल व्यापारिक बंदरगाह को अपने कबजे में ले लिया।
- जून 1665 में शिवाजी और राजा जय सहि प्रथम (औरंगज़ेब का प्रतिनिधित्व) के बीच पुरंदर की संधि (Treaty of Purandar) पर हस्ताक्षर किये गए।
 - इस संधि के अनुसार, मराठों को कई कलि मुगलों को देने पड़े और शिवाजी, औरंगज़ेब से आगरा में मलिन के लिये सहमत हुए। शिवाजी अपने पुत्र संभाजी को भी आगरा भेजने के लिये तैयार हो गए।

शिवाजी की गरिफ्तारी:

- जब शिवाजी वर्ष 1666 में आगरा में मुगल सम्राट से मलिन गए, तो मराठा योद्धा को लगा कि औरंगज़ेब ने उनका अपमान किया है जिससे वे दरबार से बाहर आ गए।
- जिसके बाद उन्हें गरिफ्तार कर बंदी बना लिया गया। शिवाजी और उनके पुत्र का आगरा से भागने की कहानी आज भी प्रामाणिक नहीं है।
- इसके बाद वर्ष 1670 तक मराठों और मुगलों के बीच शांति बनी रही।
- मुगलों द्वारा संभाजी को दी गई बरार की जागीर उनसे वापस ले ली गई थी।
- इसके जवाब में शिवाजी ने चार महीने की छोटी सी अवधि में मुगलों के कई कषेत्रों पर हमला कर उन्हें वापस ले लिया।
- शिवाजी ने अपनी सैन्य रणनीतिके माध्यम से दक्कन और पश्चिमी भारत में भूमिका एक बड़ा हिस्सा हासिल कर लिया।
- प्राप्त उपाधि:
 - उन्होंने छत्रपति, शाककारता, कषत्रयि कुलवंत और हदिव धर्म धारक की उपाधिधारण की।
 - शिवाजी द्वारा स्थापित मराठा साम्राज्य समय के साथ बड़ा होता गया और 18वीं शताब्दी की शुरुआत में प्रमुख भारतीय शक्ति बन गया।
- मृत्यु:
 - वर्ष 1680 में रायगढ़ में शिवाजी का निधन हो गया और रायगढ़ कलि में उनका अंतिम संस्कार किया गया।

शिवाजी के अधीन कैसा प्रशासन था?

■ केंद्रीय प्रशासन:

- इसकी स्थापना शिवाजी द्वारा प्रशासन की सुदृढ़ व्यवस्था के लिये की गई थी जो प्रशासन की दक्कन शैली से काफी प्रेरित थी।
- अधिकांश प्रशासनिक सुधार अहमदनगर में मलिक अंबर (Malik Amber) के सुधारों से प्रेरित थे।
- राज्य का सर्वोच्च प्रमुख राजा होता था जैसे 'अष्टप्रधान' के नाम से जाना जाने वाले आठ मंत्रियों के एक समूह द्वारा शासन कार्य में सहायता प्रदान की जाती थी।
- पेशवा, जैसे मुख्य प्रधान के रूप में भी जाना जाता है, मूल रूप से राजा शिवाजी की सलाहकार परिषद का नेतृत्व करता था।

■ राजस्व प्रशासन:

- शवाजी ने जागीरदारी प्रणाली को समाप्त कर दिया और इसे रैयतवाड़ी प्रणाली से बदल दिया तथा वंशानुगत राजस्व अधिकारियों की स्थिति में परिवर्तन किया, जिन्हें देशमुख, देशपांडे, पाटलि एवं कुलकर्णी के नाम से जाना जाता था।
- शवाजी उन मीरासदारों (Mirasdar) का कड़ाई से पर्यवेक्षण करते थे जिनके पास भूमि पर वंशानुगत अधिकार थे।
- राजस्व प्रणाली मलिक अंबर की काठी प्रणाली (Kathi System) से प्रेरित थी, जिसमें भूमि के प्रत्येक टुकड़े को रॉड या काठी द्वारा मापा जाता था।
- चौथ और सरदेशमुखी आय के अन्य स्रोत थे।
 - चौथ कुल राजस्व का 1/4 भाग था जिसे गैर-मराठा क्षेत्रों से मराठा आक्रमण से बचने के बदले में वसूला जाता था।
 - यह आय का 10 प्रतिशत होता था जो अतिरिक्त कर के रूप में था और यह प्रायः साम्राज्य के बाहर लगाया जाता था।
- सैन्य प्रशासन:
 - शवाजी ने एक अनुशासित और कुशल सेना का गठन किया।
 - सामान्य सैनिकों को भुगतान नकद में किया जाता था, लेकिन प्रमुख और सैन्य कमांडर को जागीर अनुदान (सरंजम या मोकासा) के माध्यम से भुगतान किया जाता था।
 - मराठा सेना में इन्फैंट्री सैनिक, घुड़सवार, नौसेना आदि शामिल थे।

स्रोत: पी.आई.बी.

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/shivaji-jayanti-2022>

